



मेरी कुंवारी बुर की सील डाक्टर ने तोड़ी- 2

“देशी चुदाई की कहानी में पढ़ें कि मैं चूची में दर्द के इलाज के लिए डॉक्टर के पास गयी तो उस हरामी डॉक्टर ने कैसे मेरी वासना को जगा कर मेरी चूत की सील तोड़ दी. ...”

Story By: (vipul3)

Posted: Tuesday, October 27th, 2020

Categories: [पहली बार चुदाई](#)

Online version: [मेरी कुंवारी बुर की सील डाक्टर ने तोड़ी- 2](#)

मेरी कुंवारी बुर की सील डाक्टर ने तोड़ी- 2

देशी चुदाई की कहानी में पढ़ें कि मैं चूची में दर्द के इलाज के लिए डॉक्टर के पास गयी तो उस हरामी डॉक्टर ने कैसे मेरी वासना को जगा कर मेरी चूत की सील तोड़ दी.

मेरी देशी चुदाई की कहानी के पहले भाग

[मेरी कुंवारी बुर की सील डाक्टर ने तोड़ी- 1](#)

में आपने पढ़ा कि मैं अपनी मम्मी के साथ अपनी चूची में दर्द के इलाज के लिए डॉक्टर के पास गयी थी.

अब आगे देशी चुदाई की कहानी :

डाक्टर ने अगले दिन सुबह दस बजे आने के लिए कहा। कुछ निर्देश दिए जैसे कि खाली पेट आना है.

फिर हम दोनों घर आ गयी.

मम्मी ने भैया भाभी को बताया कि इसके स्तन में गांठ है और डाक्टर ने आपरेशन के लिए बोला है.

दीदी जीजू को भी फोन पर बता दिया था।

भैया कहने लगे- अभी शुरुआत है. आपरेशन करा दो तो सही रहेगा।

सबकी बातें सुनकर मेरा दिमाग खराब हो रहा था मेरी कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि मैं क्या करूँ।

दोस्तो, आप लोग सोच रहे होंगे कि क्या वहाँ पर कोई नर्स महिला डाक्टर नहीं थी. तो उस अस्पताल में नर्स तो थी पर आपरेशन करने के लिए वही डाक्टर था जो सर्जन स्पेसलिस्ट था. मतलब सारे आपरेशन वही डाक्टर करता था।

मैंने ये बात मम्मी से कही तो मम्मी ने मुझे डाँट दिया और बोली- ज्यादा ड्रामा मत करो. तुम्हें इलाज कराने से मतलब है या नर्स, डाक्टर से ?

तो मैंने किसी दूसरे अस्पताल के लिए कहा जिसमें महिला डॉक्टर हो. तो भी मम्मी ने मना कर दिया क्योंकि यहाँ पर अब तक बहुत खर्चा हो चुका था. और यह अस्पताल ज्यादा दूर भी नहीं था. बाकी अस्पताल बहुत दूर-दूर थे।

अगले दिन बाइक से भैया और मम्मी मुझे लेकर अस्पताल गये, उस दिन मेरा आपरेशन होना था।

डाक्टर मुझे अन्दर आपरेशन वाले रूम में ले गया.
साथ में मम्मी भी थी.
भैया बाहर ही बैठे रहे।

फिर डाक्टर ने कहा कि कमीज़ उतार कर लेट जाओ.

मम्मी ने मेरी कमीज़ निकाल दी तो मैंने ब्रा पर दोनों हाथ रख लिए और कहा- मम्मी, मैं ये नहीं उतारूंगी.

तो मम्मी बोली- ज्यादा नौटंकी मत करो. जब डाक्टर साहब कह रहे हैं तो उतारने में क्या परेशानी है ?

और इतना कहते ही मम्मी ने पीछे से मेरी ब्रा का हुक खोल दिया और मैं ऊपर से नंगी हो गई.

डाक्टर ने मुझे लिटा दिया और आपरेशन की तैयारी करने लगा.
कंपाउंडर ने मेरे दोनों हाथ पकड़े हुए थे.

मैं रोने लगी थी. मैं ऊपर से नीचे तक कांप रही थी।

वे दोनों मेरे स्तन भी देख रहे थे तो मुझे बहुत शर्म आ रही थी।
लगभग पौन घंटे आपरेशन चला.

फिर डाक्टर ने टाँके लगा कर पट्टी लगायी और दवाई दी. फिर हम लोग घर आ गये।

मेरे स्तन का आपरेशन तो हो गया था लेकिन परेशानी अभी खत्म नहीं हुई थी।

गर्मियों के दिन थे मैं ढीले कपड़े पहनती थी और रात को समीज ही पहनती थी.

ब्रा पहनने के लिए डाक्टर ने मना कर दिया था।

डाक्टर ने कहा कि पट्टी बदलवाने के लिए आना पड़ेगा. एक दिन छोड़ कर पट्टी बदली जायेंगी।

अब हर दूसरे दिन भैया के साथ बाइक पर मैं पट्टी कराने जाती थी. साथ में मम्मी जाती तो किसी दिन भाभी जाती.

मुझे देखने के लिए दीदी भी अपनी ससुराल से कुछ दिनों के लिए आ गयीं थी।

भैया बाहर ही बैठे रहते थे, मम्मी या भाभी मेरे साथ अन्दर रहती, मैं गाउन पहन कर जाती थी जिसमें ऊपर तनियाँ होती हैं और ऊपर से खुला होता है.

मैं गाउन के ऊपर दुपट्टा डाल लेती थी।

जब पट्टी होती तो कंधों से तनियाँ उतार कर गाउन नीचे कर दिया जाता. मैं ऊपर से नंगी

हो जाती और कंपाउंडर पट्टी बदल देता ।

एक दिन कंपाउंडर कह रहा था इसके स्तन बहुत गोरे हैं.

पट्टी बदलते समय कंपाउंडर मेरे दूसरे स्तन को छू देता या दबाने की कोशिश करता. लेकिन साथ में मम्मी या भाभी होती थी इसलिए शायद ज्यादा कुछ नहीं करता था ।

एक दिन मेरे साथ भाभी गयी थी तो मज़ाक में भाभी बोली- नीलम किसी को अपने स्तन दिखाती नहीं है लेकिन अब तो मजबूरी में दिखाने पड़ रहे हैं.

तो कंपाउंडर भी हँसने लगा.

डाक्टर और कंपाउंडर भी कभी-कभी कुछ बातें मज़ाक में बोल देते थे ।

दोस्तो, इस सबमें लगभग एक महीना लग गया.

अब मैं ठीक होने लगी थी. मेरे टाँके भी कट चुके थे.

जब मैं आखिरी दिन गयी तो डाक्टर ने कहा कि एक सप्ताह के बाद एक बार आकर चेक करवा लेना !

मम्मी ने कहा- ठीक है.

फिर हम लोग घर आ गये ।

अब मुझे बस एक बार अस्पताल जाना था क्योंकि डाक्टर ने मम्मी से बोल दिया था एक सप्ताह बाद आकर चेक करवाने को ।

इसी बीच गाँव से पापा का फोन आ गया तो भैया मम्मी को लेकर गाँव चले गये.

भाभी अपने मायके गई हुई थी और दीदी तो मुझसे मिलकर पहले ही अपने ससुराल जा

चुकी थी.

मतलब उस दिन मैं घर पर अकेली थी।

सुबह-सुबह मम्मी ने मुझे फोन किया और कहा- आज अस्पताल जाकर डाक्टर से एक बार चैक करवा लेना!

मैंने मना कर दिया.

तो मम्मी डांटने लगी, कहने लगी- एक बार जाकर चैक करवा लोगी तो क्या हो जाएगा! उस दिन मेरा बिल्कुल भी मन नहीं था जाने का ... क्योंकि मैं ठीक हो गयी थी. पर दवाई चल रही थी.

लेकिन जब मम्मी ने डाँटा तो मुझे जाना ही पड़ा।

मैं आटो से चली गई, जब मैं वहाँ पहुँची तो डाक्टर साहब एक मरीज को देख रहे थे.

उस दिन लोग भी कम ही थे. शायद रविवार की वज़ह से कम लोग आये थे. उस दिन रविवार था और रविवार को डाक्टर साहब दोपहर दो बजे तक मरीजों को देखते थे.

लेकिन ये बात मुझे बिल्कुल भी मालूम नहीं थीं।

डाक्टर ने मुझे देखा और कहा- अब ठीक हो नीलम ... बस थोड़ी देर रुको।

मैं बाहर बैठ कर अपनी बारी का इंतजार करने लगी।

अस्पताल के बाकी डाक्टर भी जा चुके थे. बस कुछ कर्मचारी ही बचे थे क्योंकि दो बज चुके थे.

और मैं आने में लेट हो गयी थी. अगर मुझे मालूम होता तो मैं जल्दी आ जाती।

लगभग दस मिनट के बाद डाक्टर ने मुझे आवाज़ लगाकर अन्दर बुलाया.

मैं अन्दर चली गयी.

डाक्टर ने कहा- अब तो समय अधिक हो गया है, तुम लेट आयी थी, अब कल आना।

यह सुनकर मैं उदास हो गयी. मैं बोली- डाक्टर साहब, मुझे नहीं पता था कि रविवार को ओ.पी.डी का समय दो बजे तक होता है. प्लीज आज ही चेक कर लीजिये. नहीं तो मुझे कल फिर से आना पड़ेगा।

डाक्टर गर्दन हिलाते हुए मना करने लगा.

तो मैंने फिर कहा- डाक्टर साहब प्लीज हो सके तो देख लीजिये।

तभी डाक्टर बोला- चलो अच्छा अब आ ही गयी हो तो ठीक है. वैसे मैं रविवार को दो बजे के बाद किसी मरीज को नहीं देखता हूँ.

मैं खुश हो गयी चलो कल फिर से नहीं आना पड़ेगा।

डाक्टर मुझे ऊपर वही ले गया जहाँ मेरा आपरेशन हुआ था.

आज तो वह कंपाउंडर भी नहीं था.

फिर डाक्टर मुझे और अन्दर ले गया उस कमरे के अंदर एक छोटा कमरा था. वहाँ एक स्ट्रेचर पड़ा हुआ था.

डाक्टर ने कहा- कमीज़ उतार कर लेट जाओ.

मैंने कमीज़ उतार दी और लेट गयी.

अब मैं उपर से नंगी और नीचे सलवार पहन रखी थी.

फिर डाक्टर मेरा स्तन चैक करने लगा.

जब उसने निप्पल पर हाथ लगाया तो मेरी धड़कन बढ़ने लगी. मेरी साँसें काफी तेज चल रही थी।

फिर डाक्टर ने मेरा दूसरा स्तन पकड़ा और हँसते हुए बोला- इसमें तो गाँठ नहीं है ? और जोर से दबा दिया.

मेरी आह ... आह ... निकल गयी।

डाक्टर मुझसे बातें भी करता जा रहा था, डाक्टर बोला- तुम तो अपना फुल बॉडी चेकअप करवा लो !

मैंने मन में सोचा 'मतलब पूरे शरीर की जाँच करेगा ये !'

तो मैंने कहा- नहीं मुझे नहीं करवानी।

मेरे दूसरे स्तन को वह जोर जोर से दबा रहा था. मेरी सिसकारियाँ निकल रही थी।

तभी उसे पता नहीं कैसे याद आ गया- वह बोला तुम्हारी मम्मी कह रही थी कि तुम्हें पीरियड में बहुत दर्द होता है. उसे भी चेक करवा लो !

और इतना कहते ही उसने मेरी सलवार का नाड़ा पकड़कर खींच दिया और सलवार नीचे कर दी.

जब तक मैं सलवार पकड़ती तब तक उसने पैंटी भी घुटनों के नीचे कर दी।

अब मेरी चूत उसके सामने थी मुझे बहुत शर्म आ रही थी.

मैं चूत को दोनों हाथों से छिपाने लगी. पर कब तक छिपाती !

उसने मेरे दोनों हाथों को पकड़ कर हटा दिया और चूत देखने लगा.

मम्मी के गाँव जाने के बाद ही मैंने चूत के बाल साफ किये थे. इसलिए छोटे छोटे रोएं जितने बाल थे।

वह मेरी चूत को खोलकर देखने लगा और एक उंगली से कुरेदने लगा.
मेरी सिसकारियाँ निकल रही थी और मैं हाथ पैर हिला रही थी।

सलवार और पैंटी अभी भी मेरे पैरों में फंसी थी जिस कारण मेरे पैर खुल नहीं पा रहे थे.

जब वह चूत या भगनासा को सहलाता तो मेरे शरीर में करंट दौड़ जाता।

मैंने अपने दोनों पैरों को कसकर बन्द करते हुए चिपका लिया ; मैं खोलना नहीं चाह रही थी।

तभी उसे गुस्सा आ गया उसने मेरी सलवार और पैंटी को निकालकर मुझे बिल्कुल नंगी कर दिया और मेरे दोनों पैरों को फैलाते हुए खोल दिया।

दोस्तो, कसम से मुझे उस समय बहुत शर्म आ रही थी. मैंने दोनों आँखे बंद कर ली थी.
फिर उसने बीच वाली बड़ी उँगली चूत में डाली तो मैं ऊपर को हो गई।

दोस्तो, मैंने आज तक खुद अपनी चूत में अपनी उंगली भी नहीं डाली थी क्योंकि दर्द होता था और डर भी लगता था.

हाँ ... अपनी भगनासा चूत के दाने को रगड़ कर खुद को शांत कर लेती थी.

अब उसने मेरे दोनों हाथों को पकड़ लिया और मेरे होठों पर किस करने लगा, मेरी जीभ चूसने लगा.

इन सब हरकतों से से मैं बहुत उत्तेजित हो गयी थी. अब मैं भी चाह रही थी डॉक्टर मेरे साथ वो सब कर ही डाले.

फिर वह मेरे पास से हटा और बिल्कुल नंगा हो गया उसका लिंग काफी मोटा और लम्बा था.

इतना मोटा और लम्बा लंड मैंने पहली बार असलियत में देखा था ।

वह अपने लंड को मेरे मुँह के पास चूसाने के लिए लाया.

लेकिन मैंने मुँह ही नहीं खोला ।

जब मैंने मुँह नहीं खोला तो उसने मेरे मुँह के पास से लंड हटा लिया और सीधा ले जाकर मेरी चूत की दरार में फँसा दिया ।

जिस चूत में आज तक उँगली भी नहीं गयी थीं उसमे इतना मोटा लंड जा रहा था ।

कहां मैं 21 साल की कुंवारी लड़की और कहा वो 40 साल का डाक्टर !

पता नहीं कितनी सीलें तोड़ी होगी उसने और ना जाने कितनी चूतें फाड़ी होंगी उसने !

फिर उसके लिए मैं क्या चीज थी !

मैं अब अपनी पहली चुदाई के लिए एकदम तैयार थी.

मेरे दोनों पैर खोलकर उसने कसकर पकड़ रखे थे. कुछ देर तक तो वह लंड को चूत पर आगे पीछे घिसता रहा, फिर उसने दबाब बनाया तो सुपारा अन्दर चला गया.

अब मेरी हालत खराब हो गयी.

फिर उसने थोड़ा और जोर लगाया तो लगभग आधा लंड अन्दर चला गया था.

मैं छटपटाने लगी.

जब तक मैं संभल पाती, तब तक उसने एक जोर से धक्का लगा दिया और उसका लंड मेरी झिल्ली को फाड़ता हुआ सीधा बच्चेदानी से टकरा गया ।

मेरी तो जैसे साँस ही अटक गई थी. मेरी चीख निकल गयी !

पर उस कमरे से आवाज़ बाहर नहीं जा सकती थी इसलिए कोई फायदा नहीं था.
मैं हाथ पैर पटक रही थी.

वह दो मिनट तक रुका रहा और लंड बाहर निकाल लिया.
फिर उसने मेरी चूत को रुई से साफ किया, रुई खून से लाल हो गयी थी.

और डॉक्टर फिर से मेरी नाजुक बुर को चोदने लगा ।

लगभग दस मिनट चोदने के बाद वह झड़ गया. मैं तो पहले ही झड़ चुकी थी.

फिर उसने मुझे उसी स्ट्रेचर पर घोड़ी बना दिया और पीछे से लंड को चूत में डालकर चोदने लगा.

15-20 मिनट तक डॉक्टर लगातार मुझे चोदता ही रहा.

मुझे काफी दर्द हो रहा था लेकिन इसमें थोड़ा बहुत मजा भी था ।

फिर इसके बाद वह कुर्सी पर बैठ गया और मुझे लंड पर बैठाकर चोदने लगा. उसने मुझे गोद में उठाया और उछाल उछाल कर चोदने लगा ।

उसने मुझे तीन बार चोदा और मेरी चूत का बाजा बजा दिया था. मेरी सील टूट चुकी थी ।

फिर उसने मेरी चूत को ठीक से साफ करके धोया और पता नहीं कौन सी दवाई लगाकर रुई लगा दी.

इसके बाद उसने मुझे कपड़े पहना दिये और मुझे दो गोलियाँ खिला दी.

फिर मैं घर आ गयी.

जब मैं घर पहुँची तो पाँच बज चुके थे।

ये बात मैंने किसी को नहीं बतायी.

मम्मी दीदी को भी नहीं!

और बताती भी तो क्या यही कहती कि डाक्टर ने मुझे चोद कर मेरी सील तोड़ दी।

मम्मी ने फोन करके पूछा- चेकअप के लिए गयी थी और डाक्टर ने क्या बताया ?
तो मैंने मम्मी से कह दिया- हाँ मैं गयी थी. डाक्टर ने कहा है कि अब ठीक हो गयी हो अब घर पर ही आराम करो।

और फिर मैं कभी नहीं गयी।

मेरे स्तन पर आपरेशन का निशान आज भी है
जब मैं उसे देखती हूँ तो सिहर जाती हूँ और मुझे वो सब याद आ जाता है।

दोस्तो, उस डाक्टर के लंड से ही मेरी सील टूटना लिखा था। जबकि मैंने सोचा था कि मैं शादी के बाद ही सेक्स करूँगी.

पर वो कहते हैं ना कि :
हर चूत पर लिखा है चोदने वाले का नाम।

उसके बाद मेरी और भी चुदाई हुई वह सब बाद में लिखूँगी अगर आप मेल करोगे।

दोस्तो, आपको देशी चुदाई की कहानी कैसी लगी मुझे ईमेल करके जरूर बताना।

vipul69kumar@gmail.com

Other stories you may be interested in

मेरी कुंवारी बुर की सील डाक्टर ने तोड़ी- 1

ठरकी डाक्टर की कहानी में पढ़ें कि एक दिन मुझे मेरी चूची में दर्द महसूस हुआ. मम्मी मुझे डॉक्टर के पास ले गयी. उस डॉक्टर ने क्या किया ? मेरा नाम विपुल कुमार है. मैं उत्तर प्रदेश के एक शहर में [...]

[Full Story >>>](#)

मेरा प्रथम समलैंगिक सेक्स- 1

लेस्बियन सहेली की कहानी में पढ़ें कि मेरी एक नयी बनी सहेली मुझमें ज्यादा रूचि लेने लगी थी. उसने मेरी एक खूबसूरत सहेली को देखा तो ... नमस्कार दोस्तो, मैं सारिका कंवल आज फिर से आपके लिए एक रोचक लेस्बियन [...]

[Full Story >>>](#)

गर्लफ्रेंड की सहेलियों संग रासलीला- 6

नंगी चुदाई कहानी में पढ़ें कि कैसे मेरी गर्लफ्रेंड की सहेली अपनी चुदाई के लिए मारी जा रही थी. मैंने उसकी तमन्ना कैसे पूरी की ? मजा लें ! मित्रो, मैं विवान अपनी सेक्स कहानी में चुदाई का रंग भरने एक बार [...]

[Full Story >>>](#)

दोस्त की बहन और उसकी मम्मी की चुदाई

माँ बेटी चुदाई कहानी में पढ़ें कि दोस्त की दादी के बाद मैंने उसकी बहन को कैसे चोदा दादी की मदद से. और उसके बाद मुझे मौका मिला दोस्त की मम्मी की चुदाई का. कैसे ? मेरी पिछली कहानी दोस्त की [...]

[Full Story >>>](#)

गर्लफ्रेंड की सहेलियों संग रासलीला- 5

नंगी लड़की के जिस्म की कहानी में पढ़ें कि कैसे मैंने अपनी गर्लफ्रेंड की सहेली को नंगी करके उसके गर्म जिस्म के साथ फोरप्ले का मजा लिया और उसे भी मजा दिया. नमस्ते मेरी प्यारी प्यारी पाठिकाओ और मनचले पाठको, [...]

[Full Story >>>](#)

